Current Affairs search results for tag: festivals

1. ओडिशा में कृषि महोत्सव 'राजा' का आयोजन किया गया (June 16, 2023)

Agriculture-festival-'Raja'-organised-in-Odisha

राजा या मिथुन संक्रांति भारत के ओडिशा में मनाया जाने वाला **तीन दिवसीय नारीत्व का त्योहार** है।

खबर का अवलोकन

त्योहार के दिनों की अवधि और नाम

- राजा उत्सव तीन दिनों तक मनाया जाता है।
- पहला दिन: '**पहिली राजा**'
- दूसरा दिन: '**माझी राजा**' या '**राजा संक्रांति**' या '**मिथुन संक्रांति**'
- तीसरा दिन: '**भूदाह**' या '**बस्सी राजा**' या '**शेष राजा**'

कृषि का उत्सव और धरती माता की पूजा

- यह ओडिशा का एक अनूठा त्योहार है जहां **धरती माता पूजनीय** है।
- त्योहार के दौरान **जुताई** और **खुदाई** जैसी कृषि गतिविधियों को निलंबित कर दिया जाता है।
- **रजस्वला स्त्री** की तरह **धरती माता को बिना किसी व्यवधान के विश्राम** दिया जाता है।

मानसून के संबंध में राजा महोत्सव का महत्व

- '**पहिली राजा**' '**ज्येष्ठ**' **महीने** के **अंतिम दिन** पड़ता है, जबकि '**राजा संक्रांति**' **महीने** '**आषाढ़**' के **पहले दिन** पड़ता है।
- '**राजा संक्रांति**' वर्षा ऋतु की शुरुआत का प्रतीक है।
- किसानों का मानना है कि **मानसून की पहली बौछार से धरती की उर्वरता दोगुनी** हो जाती है।

'बासुमती स्नान' की रस्म

- त्योहार के चौथे दिन को 'बासुमती स्नान' कहा जाता है।
- महिलाएं, तीन दिनों के प्रतीकात्मक मासिक धर्म को पूरा करने के बाद, पीसने वाले पत्थर के लिए औपचारिक स्नान करती हैं।
- पीसने वाला पत्थर धरती माता या **बासुमती का प्रतिनिधित्व** करता है।

ओडिशा के बारे में

गठन - **1 अप्रैल 1936**

राजधानी - **भुवनेश्वर**

राज्यपाल - **गणेशी लाल**

मुख्यमंत्री - **नवीन पटनायक**

राज्यसभा - **10 सीटें**

लोकसभा - **21 सीटें**

2. पहला जनजातीय खेल महोत्सव (June 16, 2023)

हाल ही में, **संस्कृति मंत्रालय, ओडिशा सरकार और केआईआईटी विश्वविद्यालय** के सहयोग से **कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, भुवनेश्वर** में **पहला जनजातीय खेल महोत्सव** आयोजित किया गया।

खबर का अवलोकन

- इस कार्यक्रम में **26 राज्यों** के **5,000 जनजातीय एथलीटों और 1,000 अधिकारियों** ने भारत में स्वदेशी खेलों की विविधता और समृद्धि का प्रदर्शन किया।

- इस तरह के आयोजनों का आयोजन करके और स्वदेशी खेलों को बढ़ावा देकर, सरकार का लक्ष्य इन पारंपरिक खेलों को संरक्षित और पुनर्जीवित

करना है, उनकी निरंतर प्रासंगिकता सुनिश्चित करना और युवा पीढ़ी को उनमें भाग लेने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

स्वदेशी खेलों के बारे में

- स्वदेशी खेलों का प्रचार और विकास मुख्य रूप से संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र की सरकारों पर निर्भर करता है, क्योंकि **'खेल' राज्य का विषय है।**

- हालाँकि, केंद्र सरकार 'खेलो इंडिया - खेल के विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम' योजना जैसी पहल के माध्यम से उनके प्रयासों का समर्थन करती है।

- इस योजना में देश भर में ग्रामीण और **स्वदेशी/आदिवासी खेलों के विकास और प्रचार** के लिए समर्पित एक विशिष्ट घटक शामिल है।

- इसने विभिन्न राज्यों के एथलीटों को एक साथ आने, प्रतिस्पर्धा करने और अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करने का अवसर प्रदान किया, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और एकता को बढ़ावा मिला।

- इस योजना के तहत **मल्लखंब, कलारीपयट्टू, गतका, थांग-ता, योगासन और सिलंबम** जैसे कुछ स्वदेशी खेलों को बढ़ावा देने के लिए चिन्हित किया गया है।

3. वारकरी समुदाय का पालकी उत्सव (June 14, 2023)

Warkari-community’s-Palkhi-festival

हाल ही में **पुणे** में तीन दिवसीय G20 डिजिटल इकोनॉमी वर्किंग ग्रुप कॉन्फ्रेंस में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को **वारकरी समुदाय की पालकी की पहली झलक देखने का अवसर मिला।**

पालकी महोत्सव के बारे में

- पालकी उत्सव एक परंपरा है जो **1000 साल पहले** की है और महाराष्ट्र, भारत के संतों द्वारा शुरू की गई थी।

- पालखी उत्सव ज्येष्ठ (जून) के महीने में होता है और कुल **22 दिनों** तक चलता है। इसमें प्रस्थान बिंदुओं से पंढरपुर तक की यात्रा शामिल है।

- यह आज भी उनके अनुयायियों द्वारा अभ्यास किया जाता है जिन्हें वारकरी कहा जाता है।

- ये वारकरी ऐसे व्यक्ति हैं जो एक **वारी का पालन करते हैं**, जो कि त्योहार से जुड़ा एक मौलिक अनुष्ठान है।

उत्सव का उद्देश्य और स्थान

- पालखी उत्सव महाराष्ट्र के एक शहर **पंढरपुर** की एक **वार्षिक तीर्थयात्रा (यात्रा)** है, जो हिंदू देवता **विठोबा** के निवास के रूप में कार्य करता है।

- त्योहार इस देवता का सम्मान करने और उनके प्रति भक्ति व्यक्त करने के लिए आयोजित किया जाता है।

- त्योहार के दौरान, **वारकरी पालकी या रथ** लेकर समूहों में चलते हैं।

- इन पालकियों में विभिन्न संतों की पादुका या पवित्र चप्पल हैं, जिनमें **ज्ञानेश्वर और तुकाराम** सबसे प्रमुख हैं।

- पालकी जुलूस महाराष्ट्र के पुणे जिले में दो अलग-अलग स्थानों से शुरू होता है। ज्ञानेश्वर की पालकी आलंदी से शुरू होती है, जबकि तुकाराम की पालकी देहू से शुरू होती है।

वारकरी समुदाय

- यह समुदाय एक संप्रदाय हिंदू धर्म की **भक्ति आध्यात्मिक परंपरा** से जुड़ा है और भारत के **महाराष्ट्र राज्य में इसका एक लंबा इतिहास** है।

- तेरहवीं शताब्दी सीई के बाद से यह धार्मिक ताने-बाने का एक प्रमुख हिस्सा रहा है।

- इस समुदाय के संत विभूतियों ने महाराष्ट्र की **आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत** में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- इस समुदाय से जुड़े कुछ प्रसिद्ध संतों में **ज्ञानेश्वर, नामदेव, चोखामेला, एकनाथ और तुकाराम** शामिल हैं।

4. श्रीलंका का राष्ट्रीय पॉसन सप्ताह शुरू हुआ (May 31, 2023)

Sri-Lanka's-National-Poson-Week-begins

श्रीलंका में, **राष्ट्रीय पॉसन सप्ताह 31 मई को शुरू** हुआ।

खबर का अवलोकन

- पॉसन उत्सव **6 जून तक आयोजित किया जाएगा** और यह **मिहिंतलय, थंथिरिमालय और अनुराधापुरा पवित्र शहर** के आसपास केंद्रित होगा।

- यह त्योहार **236 ईसा पूर्व में सम्राट अशोक के पुत्र अरहत महिंदा** द्वारा श्रीलंका में बौद्ध धर्म की शुरुआत का जश्न मनाता है।

- इस वर्ष उत्सव के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के अनुराधापुरा आने की उम्मीद है और भक्तों को सभी सुविधाएं प्रदान करने के लिए कदम उठाए गए हैं।

- पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक संकट और लॉकडाउन के कारण त्योहार बड़े पैमाने पर नहीं मनाया जा सका।

- इसके अलावा अनुराधापुरा में सफर को आसान बनाने के लिए ट्रैफिक पुलिस ने विशेष ट्रैफिक प्लान लागू किया है।

पॉसन फेस्टिवल के बारे में

- पॉसन, जिसे पोसोन पोया के नाम से भी जाना जाता है, **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में श्रीलंका में बौद्ध धर्म के आगमन** का जश्न मनाते हुए श्रीलंका के बौद्धों द्वारा आयोजित एक वार्षिक उत्सव है।

- त्योहार वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण **पोया (पूर्णिमा) अवकाश** है और वर्ष का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध अवकाश है।

- पॉसन पूरे द्वीप में मनाया जाता है, **अनुराधापुरा और मिहिंताले** में त्योहार के सबसे महत्वपूर्ण समारोह आयोजित किए जाते हैं।

- त्योहार जून की शुरुआत में आयोजित किया जाता है, जो जून पूर्णिमा के साथ होता है।

5. पहला अर्बन क्लाइमेट फिल्म फेस्टिवल (May 25, 2023)

First-Urban-Climate-Film-Festival

शहरी बस्तियों पर जलवायु परिवर्तन के **पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों** के बारे में **दर्शकों को जागरूक करने के लिए पहली बार** शहरी **जलवायु फिल्म महोत्सव का आयोजन न्यू टाउन, कोलकाता** में 3 से 5 जून तक होने जा रहा है।

खबर का अवलोकन

- इस महोत्सव में शहरी बस्तियों पर **जलवायु परिवर्तन के पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों को दर्शाया जाएगा।**

- दर्शक फिल्म के माध्यम से इन परिदृश्यों को देख सकेंगे।

- इस दौरान **12 देशों की 16 फिल्में प्रदर्शित की जाएंगी।**

- शहरी भवनों पर जलवायु-परिवर्तन का प्रभाव पर विचार-विमर्श के लिए फिल्म निर्माताओं के साथ प्रश्नोत्तरी सत्र भी रखा जाएगा।

- इस विषय पर लोगों के विचार भी आमंत्रित किए जायेंगे।

- इसका उद्देश्य नागरिकों को यू-20 प्राथमिकता वाले क्षेत्रों और पर्यावरण के लिए जीवन शैली (एलआईएफई) मिशन के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान के अनुरूप 'पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार व्यवहार' करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

- 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक विशेष समापन समारोह के साथ यह महोत्सव सम्पन्न होगा।

महोत्सव के आयोजक

- मार्च 2023 में नई दिल्ली में शुरू किए गए इस फिल्म महोत्सव का आयोजन **राष्ट्रीय शहरी मामलों के संस्थान** द्वारा किया जा रहा है।

- यह **सिटी इन्वेस्टमेंट्स टू इनोवेट, इंटीग्रेट एंड सस्टेन (सीआईटीआईआईएस)** कार्यक्रम के माध्यम से **यू20 (जी-20 का शहरी ट्रैक)** से संबंद्ध कार्यक्रमों के अंतर्गत किया जा रहा है।

- यह महोत्सव **आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, फ्रांसीसी विकास एजेंसी (एएफडी), यूरोपीय संघ और न्यू टाउन कोलकाता ग्रीन स्मार्ट सिटी कार्पोरेशन** लिमिटेड द्वारा समर्थित है।

महोत्सव में शामिल सदस्यों के नाम

- डॉ. सुरभि दहिमा (प्रोफेसर, भारतीय जनसंचार संस्थान)
- डॉ प्रणब पातर (मुख्य कार्यकारी, ग्लोबल फाउंडेशन फॉर एडवांसमेंट ऑफ एनवायरनमेंट)
- सब्यसांची भारती (उप निदेशक, सीएमएस वातावरण)

पृष्ठभूमि

- **शहरी जलवायु फिल्म महोत्सव** 24 मार्च को **नई दिल्ली में एलायांस फ्रांसिस** में शुरू किया गया था।
- दिल्ली में सफल आयोजन के बाद मुंबई में एलायांस फ्रांसिस दी बॉम्बे में भी यह महोत्सव आयोजित किया गया।
- इस महोत्सव में भारत, फ्रांस, ईरान और अमेरिका जैसे देशों के फिल्म निर्माताओं द्वारा भेजी गई फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

6. राज्य मंत्री डॉ एल मुरुगन कान फिल्म महोत्सव में प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे (May 15, 2023)

MInister-of-State-Dr-L-Murugan

सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री **डॉ एल मुरुगन** 16 से 27 मई तक **कान अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव** में **भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे।**

खबर का अवलोकन

- उनके साथ **द एलिफेंट व्हिस्परर्स फेम** के फिल्म निर्माता **गुनीत मोंगा**, भारतीय अभिनेत्री **मानुषी छिल्लर, ईशा गुप्ता** और प्रशंसित मणिपुरी अभिनेता **कंगाबम तोम्बा** भी होंगे।
- भारतीय पवेलियन की संकल्पना और डिजाइन **राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद** द्वारा वैश्विक समुदाय के लिए '**भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन**' विषय के साथ की जा रही है।
- मंडप का डिज़ाइन **सरस्वती यंत्र** से प्रेरित है, जो देवी सरस्वती का अमूर्त प्रतिनिधित्व है।

- **कानू बहल की आगरा** और **अनुराग कश्यप की कैनेडी** सहित **चार भारतीय फिल्मों ने कान्स फिल्म फेस्टिवल** में आधिकारिक चयन के लिए जगह बनाई है।

- इनके अलावा **मार्चे डू** फिल्म्स में कई भारतीय फिल्में दिखाई जाएंगी।

- क्लासिक्स वर्ग में मणिपुरी फिल्म '**इशानहोउ**' प्रदर्शित की जाएगी।

कान्स फिल्म फेस्टिवल के बारे में

- कान्स फिल्म फेस्टिवल कान, फ्रांस में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले सबसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में से एक है।

इतिहास और महत्व

- यह महोत्सव पहली बार 1946 में स्थापित किया गया था और तब से यह वैश्विक फिल्म उद्योग में एक प्रमुख कार्यक्रम बन गया है।

- यह विभिन्न देशों और संस्कृतियों की फिल्मों की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रदर्शित करने और बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

फिल्म प्रदर्शन और प्रतियोगिताएं

- इस उत्सव में विभिन्न प्रतिस्पर्धी खंड शामिल हैं, जैसे कि सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए पाल्मे डी'ओर, जो उद्योग में सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक है।

फिल्म निर्माताओं और फिल्मों पर प्रभाव

- कान्स फिल्म फेस्टिवल कई प्रशंसित फिल्मों और उभरती प्रतिभाओं के लिए लौन्चिंग पैड के रूप में कार्य करता है।

- एक पुरस्कार जीतना या कान्स में आलोचनात्मक प्रशंसा प्राप्त करना एक फिल्म निर्माता के करियर को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दे सकता है और उनके काम को वैश्विक पहचान दिला सकता है।

7. तिरुवनंतपुरम दिसंबर में पांचवें वैश्विक आयुर्वेद महोत्सव की मेजबानी करेगा (May 13, 2023)

ग्लोबल आयुर्वेद फेस्टिवल (GAF 2023) का **पांचवां संस्करण तिरुवनंतपुरम, केरल में 1 दिसंबर से 5 दिसंबर, 2023 तक होगा।**

खबर का अवलोकन

- इस कार्यक्रम का आयोजन **सेंटर फॉर इनोवेशन इन साइंस एंड सोशल एक्शन (CISSA)** द्वारा **आयुष मंत्रालय, केरल सरकार** और **कई आयुर्वेद संघों** के सहयोग से किया जा रहा है।

- केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री और संसदीय मामलों के राज्य मंत्री, **वी मुरलीधरन,** आयोजन की आयोजन समिति के अध्यक्ष हैं।

- यह कार्यक्रम वर्तमान दुनिया की स्वास्थ्य चुनौतियों को दूर करने और आयुर्वेद चिकित्सकों और हितधारकों के वैश्विक नेटवर्किंग के लिए एक मंच स्थापित करने में आयुर्वेद की क्षमता को प्रदर्शित करने पर केंद्रित होगा।

- जीएएफ 2023 का विषय "**स्वास्थ्य सेवा में उभरती चुनौतियां और एक पुनरुत्थान आयुर्वेद**" है।

- इस कार्यक्रम में नोबेल पुरस्कार विजेताओं सहित **शीर्ष वैज्ञानिकों और 75 देशों के 7,500 प्रतिनिधियों** के भाग लेने की उम्मीद है।

- यह कार्यक्रम इस बात का भी पता लगाएगा कि पर्यटन क्षेत्र में आयुर्वेद को प्रभावी ढंग से कैसे प्रस्तुत किया जाए, जो केरल के विकास में अत्यधिक योगदान दे सकता है।

वैश्विक आयुर्वेद महोत्सव के बारे में

- ग्लोबल आयुर्वेद फेस्टिवल (GAF) एक **द्विवार्षिक कार्यक्रम** है जिसका उद्देश्य **चिकित्सा की समग्र प्रणाली के रूप में आयुर्वेद की क्षमता को प्रदर्शित करना है।**

- यह महोत्सव आयुर्वेद **चिकित्सकों और हितधारकों की वैश्विक नेटवर्किंग** के लिए एक मंच प्रदान करता है।

- उत्सव में **शोध पत्र, पोस्टर सत्र, और आयुर्वेदिक दवाओं, हर्बल उत्पादों** और कल्याण सेवाओं की प्रदर्शनियां शामिल हैं।

8. देहरादून में बाजरा महोत्सव (May 13, 2023)

उत्तराखंड में, **मोटे अनाज के स्वास्थ्य लाभों** के बारे में जन जागरूकता पैदा करने और इस श्रेणी में फसल उगाने की राज्य की क्षमता पर विचार-विमर्श करने के लिए **देहरादून में चार दिवसीय बाजरा उत्सव (श्री अन्न महोत्सव) 13 मई से शुरू हुआ।**

खबर का अवलोकन

- अन्न महोत्सव में केंद्रीय कृषि मंत्री **नरेंद्र तोमर** समेत अन्य राज्यों के **कृषि मंत्री, वैज्ञानिक और किसानों** ने हिस्सा लिया।

- चार दिवसीय विचार-विमर्श का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को बाजरा उत्पादन की ओर आकर्षित करना है, जिसे **2025 तक दोगुना करने का लक्ष्य** निर्धारित किया गया है।

- महोत्सव में बाजरे की उपज पर चर्चा होगी तथा इस महोत्सव के माध्यम से राज्य के किसानों को बाजरा की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

- उत्तराखंड राज्य सरकार ने इस वित्तीय वर्ष में बाजार को बढ़ावा देने के लिए **73 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है।**

- सरकार का उद्देश्य है कि किसान अधिक मोटे अनाज का उत्पादन करें ताकि उनकी अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सके।

- इस मौके पर कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालयों और कृषि अनुसंधान से जुड़ी अन्य संस्थाओं की ओर से महोत्सव के तहत 134 स्टॉल लगाए जाएंगे।

बाजरा का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष (IYOM) -2023

- संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) ने भारत के संकल्प को अपनाया और **मार्च 2021 में 2023 को अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष घोषित किया।**

- भारत के प्रस्ताव को **72 देशों का समर्थन मिला।**

- 2021 में, नीति आयोग ने **संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP**) के साथ एक आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए।

- साझेदारी बाजरा को मुख्यधारा में लाने और भारत को इसके स्वास्थ्य लाभों को बढ़ावा देने में वैश्विक नेतृत्व करने में मदद करने पर केंद्रित है।

- इस साझेदारी का उद्देश्य **छोटी जोत वाले किसानों के लिए लचीली आजीविका** का निर्माण करना और जलवायु परिवर्तन और बदलती खाद्य प्रणालियों के लिए अनुकूलन क्षमता का निर्माण करना है।

9. थावे महोत्सव बिहार में हुआ आयोजित (April 19, 2023)

थावे महोत्सव 15 और 16 अप्रैल को बिहार के गोपालगंज में हुआ और इस महोत्सव का आयोजन **पर्यटन विभाग और कला एवं संस्कृति विभाग** द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

खबर का अवलोकन

- त्योहार का उद्देश्य **गोपालगंज में पर्यटन को बढ़ावा देना और आगंतुकों को थावे दुर्गा मंदिर में आमंत्रित करना** है।

- बिहार के उपमुख्यमंत्री **तेजस्वी यादव** ने महोत्सव का उद्घाटन किया।

- फेस्टिवल के दूसरे दिन बॉलीवुड सिंगर **हिमेश रेशमिया** ने शिरकत की।

- इस वर्ष **11वां वार्षिक थावे महोत्सव** मनाया गया।

- यह उत्सव 2012 से थावे दुर्गा मंदिर के पास होमगार्ड ग्राउंड में आयोजित किया जा रहा है।

बिहार के प्रसिद्ध मेलों और त्योहारों की सूची-

- **छठ पूजा:** यह बिहार में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है और इसे सूर्य देव की पूजा करने के लिए मनाया जाता है।

- **मकर-संक्रांति**: यह हर साल 14 जनवरी को मनाई जाती है, और यह फसल के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।

- **बुद्ध जयंती**: बौद्ध धर्म के संस्थापक माने जाने वाले भगवान बुद्ध की जयंती पर मनाई जाती है।

- **सोनपुर पशु मेला:** यह एशिया के सबसे बड़े पशु मेलों में से एक है और हर साल नवंबर के महीने में आयोजित किया जाता है।

- **राजगीर महोत्सव**: यह हर साल अक्टूबर के महीने में मनाया जाता है और यह तीन दिवसीय त्योहार है जो बिहार की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है।

- **समा-चकेवा बिहुला**: यह एक ऐसा त्योहार है जो हर साल नवंबर के महीने में मनाया जाता है।

- **मधुश्रावणी:** यह एक त्योहार है जो हर साल अगस्त के महीने में मनाया जाता है, और यह देवी गंगा की पूजा के लिए समर्पित है।

- **पितृपक्ष मेला**: यह हर साल सितंबर के महीने में आयोजित किया जाता है, और पूर्वजों की पूजा के लिए समर्पित होता है।

मलमास मेला: यह बिहार में हर तीन साल में आयोजित किया जाता है, और इसे राज्य के सबसे बड़े मेलों में से एक माना जाता है।

10. विशु मध्य पूर्व में मनाया जा रहा है (April 15, 2023)

Vishu being celebrated in Middle East

दुबई में, केरलवासियों के पारंपरिक नववर्ष उत्सव विशु का उत्सव इस वर्ष परंपरा और आधुनिकता के साथ मनाया जा रहा है।

खबर का अवलोकन

- **विश्व मलयाली परिषद** ने इस वर्ष **पर्यावरण चेतना** पर विशेष जोर देने के साथ विशु के उत्सव को चिह्नित किया है।

- मलयाली समुदाय परंपरागत रूप से विशु को टोकन राशि के आदान-प्रदान के द्वारा मनाता है, जिसे '**विशु कानीतम**' के रूप में जाना जाता है।

- इस वर्ष, प्रथागत मौद्रिक भेंट के बदले, परिषद ने '**विशु थेनीतम**' की शुरुआत की, जिसका अनुवाद '**विशु पौधा उपहार**' के रूप में किया जाता है।

- परिषद के पदाधिकारियों ने भारत के महावाणिज्य दूतावास **डॉ. अमन पुरी** को एक पौधा उपहार में देकर इस पर्यावरण-अनुकूल उत्सव की शुरुआत की।

- विशु उत्सव के लिए यह नया दृष्टिकोण न केवल प्रकृति और स्थिरता के मूल्य को बढ़ावा देता है बल्कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता के प्रति बढ़ती जागरूकता को भी दर्शाता है।

विशु महोत्सव के बारे में

- विशु, भारतीय राज्य **केरल का पारंपरिक नववर्ष उत्सव** है जो पूरे क्षेत्र में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है।
- यह उत्सव **अप्रैल के महीने में मनाया जाता** है जो मलयालम कैलेंडर के अनुसार एक **नए साल की शुरुआत का प्रतीक** है।
- इस दिन को शुभ माना जाता है और **विभिन्न अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों** के साथ मनाया जाता है, जिसमें **विशुकनी** नामक एक विशेष व्यवस्था की स्थापना शामिल है, जिसमें **चावल, फल, फूल और सिक्के** जैसी चीजें शामिल होती हैं, जो **समृद्धि और प्रचुरता का प्रतीक** हैं।